

CD-65. पद-१० तेज तत्त्व का

तेज तत्त्व का सामूहिक पिंड,
धर्मस्वरूप है सूर्यदेवता.
खुद से ही खुद स्वयं प्रकाशित,
किरणों का गुण, प्रकाश देना । -- तेज तत्त्व

सत्पुरुष के प्राकृत पिंड में,
मर्मस्वरूप है भगवन् आत्मा,
स्व-पर प्रकाशक कल्याणी है,
ज्योतिस्वरूपम् श्री परमात्मा । -- तेज तत्त्व

संध्या-रात्रि अखण्ड क्रम में,
झळहळ स्व-पर उषा अनुपम,
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्,
स-आदि शान्तम् अक्रम श्रेयम् । -- तेज तत्त्व
गुण धर्माजन व्यब्धि यथा
गुण धर्माजन व्यक्त धी यथा

- कविराज नवनीत

दादा भगवानना असीम जय जयकार हो.

